नईदुनिया

संपादकीय

पांच राज्यों के चुनाव: सियासत की नई दिशा तय करने की परीक्षा

देश के पांच महत्वपूर्ण राज्यों-असम, केरल, तमिलनाडु, पांडिचेरी और पश्चिम बंगाल-में विधानसभा चुनाव की घोषणा के साथ ही राजनीतिक हलचल तेज हो गई है। इन चुनावों को केवल क्षेत्रीय सत्ता परिवर्तन की दृष्टि से नहीं देखा जा रहा, बल्कि यह राष्ट्रीय राजनीति की दिशा और दलों की रणनीतियों का भी बड़ा परीक्षण माना जा रहा है। लगभग 17.44 करोड़ मतदाता 824 सीटों के लिए मतदान करेंगे और 4 मई को इसके परिणाम सामने आएंगे। इन चुनावों में कई दिग्गज नेताओं की राजनीतिक प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी है।

सबसे अधिक चर्चा पश्चिम बंगाल की हो रही है, जहां मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस लगातार तीन बार सत्ता में रह चुकी है और अब चौथी बार सत्ता में लौटने की चुनौती का सामना कर रही है। बंगाल की 294 सीटों में से पिछले चुनाव में तृणमूल कांग्रेस को 215 सीटों पर जीत मिली थी, जबकि भाजपा 77 सीटों तक पहुंचने में सफल रही थी। भाजपा के लिए इस बार सबसे बड़ी चुनौती तृणमूल के मजबूत गढ़ को भेदने की है। पार्टी कानून-व्यवस्था, कथित तुष्टीकरण और केंद्र की योजनाओं को लागू न करने जैसे मुद्दों को लेकर चुनावी मैदान में उतर रही है। वहीं ममता बनर्जी बंगाली अस्मिता, कल्याणकारी योजनाओं और मुस्लिम मतदाताओं के मजबूत आधार के सहारे अपनी सत्ता को बरकरार रखने की कोशिश कर रही हैं।

असम में भी मुकाबला बेहद दिलचस्प माना जा रहा है। यहां भाजपा के नेतृत्व में सरकार है और मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के लिए यह चुनाव राजनीतिक परीक्षा की तरह है। कांग्रेस से भाजपा में आए हिमंत बिस्वा सरमा ने पिछले कुछ वर्षों में अपनी अलग पहचान बनाई है, लेकिन सत्ता विरोधी लहर और विपक्षी एकजुटता उनकी राह को कठिन बना सकती है। पिछली विधानसभा में भाजपा के पास बहुमत रहा है, जबकि कांग्रेस और अन्य दलों को सीमित सफलता मिली थी। भाजपा इस बार भी राष्ट्रवाद और हिंदुत्व के मुद्दों को प्रमुखता दे सकती है, जबकि कांग्रेस सामाजिक और आर्थिक मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाने की तैयारी कर रही है। दक्षिण भारत में भाजपा के सामने अलग प्रकार की चुनौती है। तमिलनाडु और केरल में पार्टी अभी तक मजबूत राजनीतिक उपस्थिति स्थापित नहीं कर पाई है। तमिलनाडु में एम. के. स्टालिन के नेतृत्व में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) कांग्रेस के साथ गठबंधन में है और सत्ता को दोहराने का प्रयास कर रही है। यहां भाजपा के लिए क्षेत्रीय दलों के बीच जगह बनाना आसान नहीं है, क्योंकि राज्य की राजनीति लंबे समय से द्रविड़ दलों के इर्द-गिर्द घूमती रही है।

केरल में स्थिति कुछ अलग है। यहां वामपंथी दलों और कांग्रेस के बीच परंपरागत मुकाबला रहा है, लेकिन भाजपा पिछले कुछ वर्षों में अपने जनाधार को बढ़ाने की कोशिश कर रही है। हालांकि राज्य में वाम मोर्चा और कांग्रेस के नेतृत्व वाला संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा अभी भी मुख्य खिलाड़ी हैं। भाजपा के लिए यहां थोड़ी भी राजनीतिक सफलता भविष्य की रणनीति के लिए महत्वपूर्ण मानी जाएगी।

पांडिचेरी का चुनाव भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। छोटे राज्य होने के बावजूद यहां की राजनीतिक परिस्थितियां अक्सर अप्रत्याशित परिणाम देती रही हैं। गठबंधन की राजनीति और स्थानीय मुद्दे यहां चुनावी समीकरण को प्रभावित करते हैं। इन सभी राज्यों के चुनावों में एक समान तत्व यह है कि सत्ताधारी दल अपनी योजनाओं और उपलब्धियों के आधार पर जनता से समर्थन मांग रहे हैं, जबकि विपक्ष सरकार की नीतियों और कमियों को मुद्दा बनाकर जनता तक पहुंचने की कोशिश कर रहा है।

आजकल

दुस्साहस : हनी ट्रैप से लेकर खुलेआम फायरिंग तक

मध्य प्रदेश की राजधानी में हाल के दिनों में सामने आए घटनाक्रम कानून-व्यवस्था को लेकर गंभीर प्रश्न खड़े करते हैं। हनी ट्रैप, ब्लैकमेलिंग और संपत्ति पर अवैध कब्जे जैसे संगठित अपराधों के बाद सार्वजनिक स्थानों पर खुलेआम फायरिंग की घटनाएं यह संकेत देती हैं कि अपराधियों के हौसले लगातार बढ़ रहे हैं। अशोका गार्डन क्षेत्र से लेकर हमीदिया अस्पताल तक बिना भय के फायरिंग करते हुए अपराधियों का पहुंचना इस बात का प्रतीक है कि अपराधी तंत्र में एक प्रकार का दुस्साहस विकसित हो चुका है।

हाल ही में सामने आए कुछ मामलों में आरोप है कि कुछ गिरोह महिलाओं का उपयोग कर परिवारों के पुरुषों को हनी ट्रैप में फंसाते हैं। इसके बाद वीडियो या अन्य माध्यमों से ब्लैकमेल कर उनसे धन वसूली या संपत्ति पर कब्जा करने का प्रयास किया जाता है। इससे पहले दो बहनों से जुड़ा मामला भी चर्चा में रहा, जिसमें लोगों को जाल में फंसाने, दबाव बनाने और कथित रूप से धर्म परिवर्तन जैसे आरोपों की जांच की बात सामने आई थी। वह मामला पूरी तरह शांत भी नहीं हुआ था कि अब नए प्रकरणों ने चिंताएं और बढ़ा दी हैं। इन घटनाओं का एक गंभीर पक्ष यह भी है कि अपराधियों का व्यवहार ऐसा प्रतीत होता है मानो उन्हें किसी प्रकार का भय नहीं है। सार्वजनिक स्थानों पर हथियारों का प्रदर्शन और फायरिंग जैसी घटनाएं न केवल कानून को चुनौती देती हैं, बल्कि आम नागरिकों में असुरक्षा की भावना भी पैदा करती हैं। यदि अपराधी इस तरह खुलेआम सक्रिय हैं, तो स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उठता है कि क्या उन्हें कहीं न कहीं से संरक्षण मिल रहा है, या फिर कानून लागू करने वाली संस्थाओं की कार्यप्रणाली में कोई कमी है।

कानून-व्यवस्था की दृष्टि से आवश्यक है कि ऐसे मामलों की निष्पक्ष और गहन जांच हो। संगठित अपराधों में अक्सर कई स्तरों पर नेटवर्क काम करता है, जिसमें वित्तीय लेन-देन, दबाव की रणनीति और स्थानीय प्रभाव शामिल होते हैं। इसलिए केवल व्यक्तिगत अपराधियों की गिरफ्तारी ही पर्याप्त नहीं होती, बल्कि पूरे नेटवर्क की पहचान कर उसे समाप्त करना जरूरी होता है। मध्य प्रदेश पुलिस के लिए यह समय आत्ममंथन और रणनीतिक सुधार का है। तकनीकी जांच, खुफिया तंत्र की मजबूती और त्वरित न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से ही ऐसे अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। कानून का भय तभी स्थापित होगा जब अपराधियों को यह स्पष्ट संदेश मिले कि किसी भी प्रकार का अपराध-चाहे वह हनी ट्रैप हो या सार्वजनिक हिंसा-कठोर दंड से बच नहीं सकता। तभी राजधानी में नागरिकों का विश्वास कानून-व्यवस्था पर पुन: मजबूत हो सकेगा।

शक्ति का रहस्य और नवरात्रि पर्व : नवरात्रि पर्व पर साधना से मिलता है अभीष्ट फल

श्रीराम माहेश्वरी

भारत के अलग-अलग राज्यों में स्थानीय मान्यताओं के अनुसार साधक पूजा-आराधना कर पर्व मनाते हैं। नवरात्रि पूजा में कुमारी कन्याओं का पूजन प्रत्यक्ष मां दुर्गा का विग्रह माना गया है। अंतिम दिन पूज्य पंडित से हवन कराते हैं। कन्या भोज कराते हैं। इन नौ दिनों में प्रतिदिन मां दुर्गा जी को नैवेद्य अर्पित करते हैं। अंतिम दिन हलवे का प्रसाद माताएं-बहनें बनाती हैं। माता को अर्पित करती हैं। कन्याओं को वस्त्र-दक्षिणा देते हैं। नवरात्रि बीतने पर दसवें दिन विसर्जन करते हैं। श्री रामनवमी के दिन भगवान श्रीराम तथा माता जानकी की पूजा करने का भी विधान है। यह दिन भगवान के प्रकट दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्री रामायण पाठ घर-घर में होता है। श्रद्धालु यह दिन उत्सव के रूप में मनाते हैं। यह दिन विशेष रूप से भगवान के चरित्र और गुणों का स्मरण करने तथा जप करने का है।

भारतीय संस्कृति में नवरात्रि पर्व का विशेष महत्व है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक यह पर्व मनाया जाता है। एक संवत्सर में चार नवरात्र होते हैं। आश्विन का नवरात्र शारदीय नवरात्र तथा चैत्र का नवरात्र वासंतिक नवरात्र कहा जाता है। दो गुप्त नवरात्रि भी होती हैं। इस पर्व में मां दुर्गा की आराधना करने का विधान है।

आध्यात्मिक दृष्टि से शक्ति का स्वरूप विशेष दिव्य और उदात्त है। शक्ति ही सृष्टि का सृजन करती है। मां जगत जननी ही सृष्टि का आदि कारण है। यह शक्ति ही पराशक्ति है। इसके अनेक स्वरूप हैं। मां दुर्गा, काली, गायत्री, तारा, भुवनेश्वरी, बगला, षोडशी, धूमावती, त्रिपुरा, कमला, मातंगी तथा पद्मावती इन्हीं के रूप हैं। नवरात्रि के इन दिनों में श्री महालक्ष्मी, श्री मां सरस्वती, महिषासुरमर्दिनी, मां शैलपुत्री, मां ब्रह्मचारिणी, मां चंद्रघंटा, मां कुष्मांडा, मां स्कंदमाता, मां कात्यायनी, मां कालरात्रि, मां महागौरी तथा मां सिद्धिदात्री की पूजा होती है। साधक को पहले दिन स्नान आदि से पवित्र होकर पूजा का स्थान स्वच्छ कर लेना चाहिए। शुभ मुहूर्त में घट स्थापना करना चाहिए। नवरात्र व्रत स्त्री-पुरुष दोनों करते हैं। कई श्रद्धालु श्रद्धा अनुसार एक समय फलाहार करके व्रत रखते हैं। कुछ लोग पहले और अष्टमी के दिन व्रत रखते हैं।

भारत के अलग-अलग राज्यों में स्थानीय मान्यताओं के अनुसार साधक पूजा-आराधना कर पर्व मनाते हैं। नवरात्रि पूजा में कुमारी कन्याओं का पूजन प्रत्यक्ष मां दुर्गा का विग्रह माना गया है। अंतिम दिन पूज्य पंडित से हवन कराते हैं। कन्या भोज कराते हैं। इन नौ दिनों में प्रतिदिन मां दुर्गा जी को नैवेद्य अर्पित करते हैं। अंतिम दिन हलवे का प्रसाद माताएं-बहनें बनाती हैं। माता को अर्पित करती हैं। कन्याओं को वस्त्र-दक्षिणा देते हैं। नवरात्रि बीतने पर दसवें दिन विसर्जन करते हैं। श्री रामनवमी के दिन भगवान श्रीराम तथा माता जानकी की पूजा करने का भी विधान है। यह दिन भगवान के प्रकट दिवस के रूप में मनाया जाता है। श्री रामायण पाठ घर-घर में होता है। श्रद्धालु यह दिन उत्सव के रूप में मनाते हैं। यह दिन विशेष रूप से भगवान के चरित्र और गुणों का स्मरण करने तथा जप करने का है। ऐसा करने से भगवान श्रीराम की कृपा प्राप्त होती है। साधक की मनोकामना पूर्ण होती है।

शक्ति रहस्य : दुर्गा शक्तिस्वरूपा हैं। प्रकृति के तीन लक्षण हैं- प्र, क्र और ति। प्र का अर्थ प्रकृष्ट और कृति का अर्थ सृष्टि है। जो सृष्टि रचने की सामर्थ्य रखती है, वही प्रकृति है। प्र सत्त्व का अक्षर है, क्र रज तथा ति तम का प्रतीक है। इन तीन गुणों के कारण त्रिदेव सृष्टि की रचना करते हैं। मां भगवती जगत की उत्पत्ति, पालन तथा लय करती हैं।

उपनिषदों में उल्लेख है कि सृष्टि के आरंभ में एक ही देवी थी। उसने ही ब्रह्मांड उत्पन्न किया। यही देवी पराशक्ति है। प्राधानिक रहस्य में लिखा है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश अपनी तीनों शक्तियों- सरस्वती, लक्ष्मी और गौरी की सहायता से इस जगत का निर्माण, पालन और लय करते हैं। देवी भागवत में लिखा है कि बिना शक्ति के आत्मदेव सृष्टि की रचना नहीं कर सकते।

इस कथन से स्पष्ट है कि शक्ति ही विश्व का संचालन करती है, पालन और लय करती है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि भगवान की स्वरूपा शक्ति ही पराशक्ति है। क्षेत्रज्ञ (जीव) नाम की अपराशक्ति है। कर्म नाम की अविद्या-माया तीसरी शक्ति है। गीता में जीव को पराशक्ति और माया को अपराशक्ति बताया गया है। भगवान द्वारा यह जड़ जगत जीव शक्ति की सहायता से ही धारण किया गया है।

विजय के लिए शक्ति उपासना : भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के समय कुरुक्षेत्र में अर्जुन को उपदेश दिया कि विजय के लिए शक्ति की उपासना करो। मां दुर्गा की अर्जुन ने उपासना की। उन्हें रण में विजय मिली। महाभारत के भीष्म पर्व में इसका उल्लेख मिलता है।

शक्ति की उपासना का महत्व : दुर्गा सप्तशती का पाठ नियमित रूप से करने का विशेष महत्व है। पूर्ण श्रद्धा, नियम, ब्रह्मचर्य और निष्ठा से यदि साधक नियमित पाठ करता है तो उसकी साधना अवश्य फलदायी होती है। किसी योग्य गुरु से दुर्गा सप्तशती की विधिपूर्वक दीक्षा लेना चाहिए। यदि ऐसा न हो सके तो किसी गुरु का मार्गदर्शन लेकर पाठ करना चाहिए। एक निश्चित अवधि में एक सहस्र पाठ स्वयं करना चाहिए। पाठ उपरांत दशांश होम, दशांश तर्पण, दशांश मार्जन तथा उसका दशांश ब्राह्मण भोजन कराना चाहिए। इसके साथ ही नवार्ण मंत्र की दीक्षा और उपदेश ग्रहण करना चाहिए। इस प्रकार विधिपूर्वक अनुष्ठान किया जाए तो साधक को अभीष्ट फल की प्राप्ति हो सकेगी।

साधना से विचारों में रूपांतरण : देवी साधना नियमित रूप से करने पर साधक के विचारों का रूपांतरण होने लगता है। उसके मन में सत्य, अहिंसा, करुणा, दया तथा सबके प्रति समानता का भाव जैसे गुणों का विकास होने लगता है। विनम्रता और सहनशीलता उसका आभूषण बन जाते हैं। भौतिक सुख-सुविधाएं छोटी और क्षणिक लगने लगती हैं। साधक के मन में संतोष का भाव आ जाता है। उसे एकांत प्रिय लगने लगता है। ऐसा होना साधना की सफलता के लक्षण हैं।

इससे स्पष्ट है कि कोई भी कार्य इच्छा, ज्ञान और क्रिया के बिना संपन्न नहीं हो सकता। व्यक्ति अपने आप में कुछ नहीं है। वह स्वयं को कर्ता मानने लगता है। इसका कारण उसका अहंकार ही है, जबकि वह निमित्त मात्र है। श्रीभगवान की शक्ति ही व्यक्ति को क्रिया, इच्छा और ज्ञान देती है।

मां भगवती की कृपा से ही मनुष्य को सर्व सामर्थ्य मिलता है। साधक सच्चे मन से विधिपूर्वक माता की उपासना करता है तो उसे अवश्य अभीष्ट फल की प्राप्ति हो सकती है। मां का हृदय बहुत कोमल और उदार है। उनकी ममता निष्छल है। साधक को स्वयं को एक पुत्र की भांति पूर्ण निष्ठा और श्रद्धा से साधना करनी चाहिए। नियमित साधना उसे शिखर तक पहुंचा सकती है।

घरेलू कामगारों की बढ़ती कमाई: खुल रही रोजगार के नए अवसरों की राहें

देश में रोजगार को लेकर हमेशा चर्चाएं होती रहती हैं। अक्सर सुनने में आता है कि युवा स्नातक, खासकर इंजीनियर, अपने लिए सही नौकरी नहीं पा रहे हैं। लेकिन इन बदलते हालातों में एक नई और दिलचस्प चर्चा सामने आई है-घर में काम करने वाले घरेलू कर्मचारियों की कमाई अब कई शुरुआती स्तर के पेशेवरों के बराबर या उससे अधिक हो गई है।

हाल ही में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर एक सॉफ्टवेयर पेशेवर ने घरेलू कामगारों की आमदनी के बारे में जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि आज के समय में घरेलू कामगार सालाना करीब 4 से 8 लाख रुपये तक कमा रहे हैं। यह कमाई कई शुरुआती स्तर के इंजीनियरों की सैलरी के बराबर है। ये आंकड़े बताते हैं कि केवल डिग्री होना ही पर्याप्त नहीं है; काम की वास्तविक उपयोगिता और स्किल्स की मांग आज पहले से कहीं अधिक है।

टेक्नोलॉजी ने घरेलू कामगारों की जिंदगी बदल दी है। कुछ प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप्स के जरिए अब घरेलू कामगार आसानी से नौकरियां ढूंढ़ सकते हैं और अपनी सेवाओं के लिए बेहतर पारिश्रमिक पा सकते हैं। उदाहरण के लिए कुछ ऐप्स पर एक मेड को 40,000 रुपये प्रति माह तक की कमाई का प्रस्ताव देखा गया। सालाना हिसाब से यह लगभग 4.8 लाख रुपये बनता है। यह बदलाव यह दर्शाता है कि आज केवल शैक्षणिक योग्यता ही नहीं, बल्कि काम की स्किल और उसकी उपयोगिता अधिक मायने रखती है। घरेलू काम, जिसे पारंपरिक रूप से कम मूल्य का समझा जाता था, अब पेशेवर स्किल और अनुशासन के साथ लाखों की कमाई का स्रोत बन गया है।

आज का समय स्किल्स का है। केवल डिग्री या डिप्लोमा रखने से ही नौकरी मिलने की गारंटी नहीं है। छोटे-छोटे काम और सेवाएं भी अच्छी आमदनी देने लगे हैं। इसका उदाहरण शहर के छोटे व्यवसाय भी देते हैं। कुछ लोग अपनी खास शैली में चाय बेचने को ही एक ब्रांड बना लेते हैं, जिससे उनकी आमदनी भी बढ़ जाती है।

घर में काम करने वाले कर्मचारियों ने भी यही रणनीति अपनाई है। समय, अनुशासन, विश्वसनीयता और पेशेवर रवैये के कारण उनके लिए अवसर बढ़ रहे हैं। उन्होंने अपने काम को एक पेशेवर सेवा के रूप में प्रस्तुत किया है। यही वजह है कि घरेलू कामगारों की कमाई अब कई शुरुआती पेशेवरों के बराबर हो गई है। देश में रोजगार का स्वरूप लगातार बदल रहा है। इंजीनियरिंग और अन्य पेशेवर क्षेत्रों में स्नातकों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन हर किसी को रोजगार नहीं मिल पा रहा है। ऐसे में नए और अनोखे अवसर खोजे जा रहे हैं। घरेलू काम, छोटे व्यवसाय, फ्रीलांसिंग और डिजिटल प्लेटफॉर्म नए रोजगार के रास्ते खोल रहे हैं। युवाओं के लिए यह संदेश है कि केवल डिग्री पर भरोसा करने की बजाय काम की वास्तविक उपयोगिता और स्किल्स को महत्व देना चाहिए। मेहनत, लगन और तकनीकी ज्ञान के साथ कोई भी काम लाभकारी बन सकता है। घरेलू कामगारों की बढ़ती आमदनी यह दिखाती है कि देश में रोजगार की संभावनाएं केवल पारंपरिक क्षेत्रों तक सीमित नहीं हैं। नई तकनीक, प्लेटफॉर्म और स्किल्स ने घरेलू काम को भी आर्थिक रूप से मूल्यवान बना दिया है। यह कहानी युवाओं और नौकरी चाहने वालों के लिए प्रेरणा है कि स्किल, अनुशासन और मेहनत से किसी भी क्षेत्र में सफलता और अच्छी आमदनी हासिल की जा सकती है।

इस प्रकार घरेलू कामगारों की कमाई की चर्चा केवल आमदनी की नहीं है, बल्कि यह रोजगार के बदलते स्वरूप और नए अवसरों की मिसाल है। देश में रोजगार की संभावनाएं बढ़ रही हैं और नए-नए पेशे उभर रहे हैं, जो स्किल और इनोवेशन को प्राथमिकता देते हैं।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

लक्षद्वीप में समुद्र से ऊर्जा और मीठा पानी : एक क्रांतिकारी पहल

लक्षद्वीप, जो भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट से लगभग 400 से 500 किलोमीटर दूर अरब सागर में फैला हुआ एक द्वीपसमूह है, अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ ऊर्जा और पानी की चुनौतियों के लिए भी जाना जाता है। इस द्वीपसमूह की अनूठी भौगोलिक स्थिति-जहां लगभग सभी द्वीप समुद्र से घिरे हुए हैं-यहां के लिए ऊर्जा और पीने के पानी की उपलब्धता को हमेशा एक बड़ी चुनौती बनाती रही है। वर्तमान में लक्षद्वीप की बिजली की जरूरत का अधिकांश भाग डीजल जनरेटरों के माध्यम से पूरा किया जाता है। हालांकि डीजल लाना महंगा है और इसका समुद्री परिवहन पर्यावरण के लिए जोखिम भरा भी है।

अब इन समस्याओं का समाधान समुद्र ही करने जा रहा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओसियन टेक्नोलॉजी ने एक ऐसा हाइब्रिड प्लांट विकसित करने की योजना बनाई है, जो समुद्र की लहरों और तापमान अंतर का उपयोग करके न केवल बिजली उत्पन्न करेगा, बल्कि रोजाना बड़ी मात्रा में पीने योग्य मीठा पानी भी तैयार करेगा। यह तकनीक दुनिया में पहली बार लागू की जा रही है और इसे लक्षद्वीप में तैनात किया जाएगा।

ओशन थर्मल एनर्जी कन्वर्जन तकनीक इस नए प्लांट की सफलता की कुंजी है। यह तकनीक समुद्र के सतही गर्म पानी और गहरे समुद्र के ठंडे पानी के बीच के तापमान अंतर का उपयोग करके ऊर्जा उत्पादन करती है। इसके मूल में भाप टरबाइन तकनीक है।

इस प्रक्रिया में सबसे पहले समुद्र की सतह का गर्म पानी वैक्यूम वातावरण में डाला जाता है। वैक्यूम में पानी जल्दी से भाप में बदल जाता है। यह भाप टरबाइन को घुमाती है, जिससे बिजली उत्पन्न होती है। इसके बाद गहरे समुद्र से लाए गए ठंडे पानी का उपयोग करके उस भाप को ठंडा किया जाता है। यह प्रक्रिया न केवल बिजली उत्पादन में सहायक होती है, बल्कि मीठा पानी भी तैयार करती है।

नए हाइब्रिड प्लांट की रोजाना उत्पादन क्षमता अत्यंत प्रभावशाली होगी। यह प्रतिदिन लगभग 1 लाख लीटर मीठा पानी तैयार करेगा। इसके साथ ही यह 65 मेगावाट बिजली भी पैदा करेगा। ध्यान देने योग्य बात यह है कि पूरे लक्षद्वीप की रोजाना बिजली की जरूरत लगभग 10 से 12 मेगावाट है। इसका मतलब है कि यह प्लांट न केवल अपनी खुद की ऊर्जा जरूरत पूरी करेगा, बल्कि अतिरिक्त बिजली द्वीप के अन्य हिस्सों में भी उपलब्ध कराएगा।

इस तरह यह परियोजना ऊर्जा और पानी दोनों के क्षेत्र में लक्षद्वीप के लिए एक स्थायी और सस्ता समाधान साबित होगी। यह डीजल जनरेटरों पर निर्भरता को खत्म करने का रास्ता खोलती है और पर्यावरण पर डीजल के प्रदूषण का जोखिम भी कम करती है।

वर्तमान में लक्षद्वीप में पानी और ऊर्जा के लिए डीजल पर निर्भरता बहुत अधिक है। डीजल की आपूर्ति मुख्य भूमि से जहाजों के माध्यम से होती है, जिससे लागत बहुत बढ़ जाती है। इसके अलावा समुद्री परिवहन में तेल रिसाव और प्रदूषण का जोखिम भी बना रहता है।

नए प्लांट से यह समस्या दूर होगी। यह पूरी तरह से स्वच्छ और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत है। इसके अलावा प्लांट अपने संचालन के लिए किसी बाहरी ऊर्जा स्रोत पर निर्भर नहीं होगा। मीठा पानी और बिजली दोनों ही संसाधन द्वीपवासियों के लिए स्थायी और भरोसेमंद विकल्प प्रदान करेंगे।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग ने इस परियोजना को भविष्य की ऊर्जा सुरक्षा की दिशा में एक नई कार्य योजना के रूप में अपनाया है। लक्षद्वीप जैसे छोटे द्वीपसमूह में ऊर्जा की स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण दोनों ही अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। यह परियोजना यह दिखाएगी कि समुद्र की शक्ति का उपयोग करके न केवल बिजली उत्पादन किया जा सकता है, बल्कि पीने के पानी की भी निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित की जा सकती है।

विशेष रूप से यह प्लांट समुद्री जल को मीठे पानी में बदलने की प्रक्रिया में डीजल या किसी अन्य पारंपरिक ऊर्जा स्रोत पर निर्भर नहीं होगा। इससे लक्षद्वीप का ऊर्जा और जल अवसंरचना अधिक आत्मनिर्भर बनेगा।

वैश्विक दृष्टिकोण से इस परियोजना की महत्वाकांक्षा केवल भारत तक सीमित नहीं है। यह तकनीक पूरी दुनिया के लिए मिसाल बन सकती है। कई द्वीपसमूह और तटीय क्षेत्र, जिन्हें पानी और ऊर्जा की समस्या का सामना करना पड़ता है, इस तकनीक से लाभान्वित हो सकते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार यह प्लांट केवल ऊर्जा और जल संकट को हल करने का साधन नहीं है, बल्कि यह विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की नवाचार क्षमता को भी प्रदर्शित करेगा। इस तकनीक का सफलतापूर्वक कार्यान्वयन भारत को दुनिया में नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अग्रणी देशों की सूची में शामिल कर सकता है।

लक्षद्वीप में विकसित यह हाइब्रिड प्लांट एक उदाहरण है कि कैसे प्राकृतिक संसाधनों का बुद्धिमानी से उपयोग करके ऊर्जा और जल संकट को हल किया जा सकता है। यह परियोजना न केवल द्वीपवासियों के लिए स्थायी समाधान प्रस्तुत करेगी, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक बचत के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण साबित होगी।

समुद्र की ऊर्जा और जल को संयोजित करके तैयार किया गया यह प्लांट भविष्य के ऊर्जा मॉडल की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है। जैसे ही यह प्लांट पूरी तरह सक्रिय होगा, यह दिखाएगा कि विज्ञान और तकनीक के सही उपयोग से कठिन से कठिन पर्यावरणीय और संसाधन-संबंधी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। इस पहल से यह स्पष्ट होता है कि लक्षद्वीप और अन्य द्वीपसमूहों के लिए स्वच्छ ऊर्जा और मीठे पानी की स्थायी आपूर्ति अब केवल एक सपना नहीं रह गई है, बल्कि जल्द ही वास्तविकता बन जाएगी।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

गिरता बाजार : निवेश का अवसर या चेतावनी

भारतीय शेयर बाजार हाल ही में वैश्विक घटनाओं और तेल की बढ़ती कीमतों के कारण गिरावट का सामना कर रहा है। पिछले दो हफ्तों में सेंसेक्स और निफ्टी में भारी उतार-चढ़ाव देखा गया है, जिससे निवेशकों की संपत्ति में लगभग 34 लाख करोड़ रुपये की कमी आई है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह गिरावट दीर्घकालिक निवेशकों के लिए अवसर भी प्रदान कर सकती है, बशर्ते सावधानीपूर्वक निवेश किया जाए।

पिछले कुछ हफ्तों में अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ते तनाव तथा मध्य पूर्व में युद्ध के संकेतों ने निवेशकों की चिंता बढ़ा दी है। इस संघर्ष ने कच्चे तेल की कीमतों को रिकॉर्ड स्तर तक पहुंचा दिया है, जो सीधे भारतीय इक्विटी बाजार पर प्रभाव डाल रहा है। बढ़ती ऊर्जा कीमतों के कारण वैश्विक निवेशक भारत और अन्य देशों के बाजारों से धीरे-धीरे अपने निवेश हटा रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की वैश्विक घटनाएं हमेशा बाजार में उतार-चढ़ाव लाती हैं। हालांकि दीर्घकालिक दृष्टिकोण से बाजार समय के साथ संतुलित हो जाता है और निवेशकों को सतर्क रहकर अवसर का लाभ उठाने का मौका मिलता है। सेंसेक्स और निफ्टी दोनों ही पिछले दो हफ्तों में गिरावट की प्रवृत्ति दिखा रहे हैं। इस दौरान निवेशकों की संपत्ति में लगभग 34 लाख करोड़ रुपये की कमी दर्ज की गई है। गिरावट का मुख्य कारण तेल की बढ़ती कीमतें, वैश्विक भू-राजनीतिक संकट और अमेरिकी बाजारों में अस्थिरता हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि निवेशकों को तत्काल प्रतिक्रिया देने के बजाय लंबी अवधि के दृष्टिकोण से निवेश करना चाहिए। जब बाजार में गिरावट आती है, तो अक्सर मजबूत बुनियादी कंपनियों के शेयरों की कीमतें आकर्षक स्तर पर पहुंच जाती हैं। यह दीर्घकालिक निवेशकों के लिए लाभ का अवसर प्रस्तुत करता है।

विशेषज्ञों का सुझाव है कि मौजूदा गिरावट के दौरान निवेशकों को केवल अल्पकालिक लाभ के बजाय दीर्घकालिक निवेश पर ध्यान देना चाहिए। बाजार में अस्थिरता के बावजूद मजबूत बुनियादी कंपनियां और अच्छी कॉर्पोरेट प्रबंधन वाली कंपनियां समय के साथ बेहतर रिटर्न देती हैं। वर्तमान समय में बैंकिंग और वित्तीय सेवाएं, ऑटो और ऑटो से जुड़े उद्योग, उपभोक्ता क्षेत्र, नई अर्थव्यवस्था से जुड़े व्यवसाय तथा पावर सेक्टर जैसे क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन की संभावना अधिक मानी जा रही है। ये क्षेत्र न केवल घरेलू मांग से प्रभावित होते हैं, बल्कि वैश्विक आर्थिक घटनाओं के बावजूद अपेक्षाकृत स्थिर रिटर्न देने की क्षमता रखते हैं।

स्मॉल और मिड कैप शेयरों में आई गिरावट के कारण कई अच्छी कंपनियों के शेयर मूल्य के आधार पर सस्ते हो गए हैं। यह निवेशकों के लिए एक अच्छा अवसर हो सकता है, लेकिन इन शेयरों में निवेश करते समय बाजार की अस्थिरता और जोखिम का ध्यान रखना आवश्यक है। जो निवेशक सीधे शेयरों में निवेश करने में सहज नहीं हैं, उनके लिए म्युचुअल फंड एक बेहतर विकल्प हो सकता है। म्युचुअल फंड विशेषज्ञों द्वारा प्रबंधित होते हैं और विभिन्न क्षेत्रों में निवेश करने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे जोखिम का विभाजन होता है और निवेशकों को अपेक्षाकृत स्थिर रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि तेल की कीमतों और मध्य पूर्व के तनाव का असर अगले कुछ हफ्तों में बाजार पर दिखाई देता रहेगा। हालांकि दीर्घकालिक दृष्टिकोण से यह गिरावट निवेशकों के लिए अवसर का संकेत भी देती है। इतिहास बताता है कि संकट के समय बाजार में गिरावट आती है, लेकिन समय के साथ बाजार फिर मजबूती हासिल करता है। जैसे-जैसे युद्ध की स्थिति शांत होती है और वैश्विक आर्थिक परिस्थितियां स्थिर होती हैं, बाजार पुन: तेजी की ओर बढ़ता है। इसलिए निवेशकों को संयमित रहकर मजबूत बुनियादी कंपनियों में निवेश बढ़ाने की रणनीति अपनानी चाहिए। हालांकि वर्तमान समय में निवेश का अवसर है, लेकिन जोखिम को पूरी तरह नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। निवेशकों को अपनी जोखिम सहनशीलता का मूल्यांकन करना चाहिए और उसी के अनुसार निवेश करना चाहिए। अचानक होने वाली वैश्विक घटनाएं और तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव निवेशकों को अल्पकालिक हानि भी पहुंचा सकते हैं। विशेषज्ञ सुझाव देते हैं कि निवेशकों को केवल एक या दो क्षेत्रों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों में निवेश कर जोखिम का प्रबंधन करना अधिक सुरक्षित रणनीति मानी जाती है।

हाल के दो हफ्तों में भारतीय शेयर बाजार में गिरावट और वैश्विक तनाव ने निवेशकों के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति बनाई है। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि यह समय निवेश के लिए अवसर भी प्रदान करता है। मजबूत बुनियादी कंपनियों में दीर्घकालिक निवेश, विभिन्न क्षेत्रों में निवेश का विस्तार और म्युचुअल फंड जैसे विकल्पों का उपयोग करके निवेशक इस गिरावट का लाभ उठा सकते हैं। इतिहास और बाजार के व्यवहार को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि संकट के बाद बाजार फिर उठता है और समय के साथ निवेशकों को लाभ मिलता है। इसलिए निवेशकों को धैर्य और समझदारी के साथ निवेश करना चाहिए, ताकि वे वर्तमान गिरावट में अवसर देखकर भविष्य में सुरक्षित और बेहतर रिटर्न प्राप्त कर सकें। **(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)**